HIN3A12b - Texte 6

उदास है मेहदी हसन का भारतीय गाँव

नारायण बारेठ

बीबीसी हिंदी डॉटकॉम के लिए, जयपुर

बुधवार, 13 जून, 2012 को 18:57 IST तक के समाचार

ख्वाहिश तो बहुत थी, मगर वो फिर से छोड़ के जाने लिए भी नहीं आए. वो रस्म-ओ-रह ऐ दुनिया निभाने के लिए भी नहीं आए.

शहंशाह-ए-ग़ज़ल मेहदी हसन के निधन की खबर राजस्थान के झुंझुनू जिले में उनके पुश्तैनी गांव लुना में बहुत दुख के साथ सुनी गई.

मरू बालू के टीलों में बचपन में साथ साथ खेले उम्रदराज नारायण सिंह ने अपने दोस्त मेहदी हसन की मौत के बारे में सुना तो उनका गला भर आया. वो कहते हैं, "मेहदी मुझे कहते कहते चला गया कि मैं मिलने आ रहा हूं. अब मेरी आँखों में आंसू हैं."

शेखावाटी इलाके का लुना गांव अपने इस लाड़ले के आगमन का अरसे तक इंतजार करता रहा. अब उनके जाने की खबर आई तो गांव में शोक छा गया.

मेहदी हसन के दोस्त नारायण सिंह ने कुछ शायराना अंदाज़ में याद किया, "वो आता मिल के जाता, चला गया मिलने वाला. कयामत तक उसकी ग़ज़ल रहेगी, चला गया गाने वाला."

लुना के पूर्व सरपंच कुरड़ाराम कहते हैं कि हसन उनके गांव की शान थी. "हम सब की दुआ थी वो दुरुस्त हो और एक बार अपने गांव आए. लेकिन क्या करे, खुदा को कुछ और ही मंजूर था."

भारत और यादें

पिछले माह ही राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने भारत के विदेश मंत्री एसएम कृष्णा से फोन पर बात की और हसन के रिश्तेदारों के कुछ और वीजा मंजूर करने का आग्रह किया था, क्योंकि उनके बेटे मोहम्मद आरिफ ने गहलोत से ये आग्रह किया था.

दरसल राजस्थान सरकार ने उनके परिवार से सम्पर्क कर हसन को इलाज के लिए भारत लाने और पूरा खर्चा उठाने का प्रस्ताव दिया था.

भारत ने पिछले महीने ही हसन, उनके बेटे, बहू और एक चिकित्सा सहायक के लिए हाथों हाथ वीजा मंजूर कर दिया था. मगर उनकी सांसों ने इतना साथ भी नहीं दिया कि वो भारत आ पाते.

नारायण सिंह को ये याद नहीं कि वो आखिरी बार मेहदी हसन से कब मिले थे.

1980 में मेहदी हसन लुना आए और लोगों से मिले थे. उन्होंने सुख-दुख बांटा और बचपन की यादों में खोए रहे. वो तब अपने पुरखों की कब्र तक गए, दुआ की और उस पर कुछ निर्माण कार्य भी करवाया.

उस वक्त लुना में मेहदी हसन के साथ तीन दिन बिताने वाले इजाजुल नबी हसन बताते हैं कि वो कभी सामने वाले को अहसास ही नहीं होने देते थे कि इतने बड़े कलाकार हैं. वो सब लोगों से प्यार से गले मिले और अपनापन दिखाते थे.

मेहदी हसन का पूरा परिवार संगीत और गायकी से जुड़ा रहा है. वो इसी रेगिस्तान में लुना गांव में 1927 में पैदा हुए और विभाजन के समय पाकिस्तान चले गए. मगर अपनी जड़ों को कभी नहीं भूले.

ना केवल उनकी हसरत थी कि वो अपने पुश्तैनी गांव में दुनिया-जहान से बेखबर एक बच्चे 'मेहदी' की तरह गली गली घूमे, बल्कि पूरे गांव की भी ये ही मुराद थी. अब कौन बताएगा जुदाई का सबब, मेहदी हसन तो नहीं रहे.

HIN3A12b Texte 7

मेहदी हसन का जाना

परवेज़ आलम
लंदन से बीबीसी हिंदी डॉट कॉम के लिए
बुधवार, 13 जून, 2012 को 20:26 IST तक के समाचार

ये एक घिसा पिटा जुमला है लेकिन कहना पड़ेगा कि मेहदी हसन के निधन के साथ ही वाकई एक अध्याय का अंत हो गया है.

वो दक्षिण एशिया के बहुत बड़े गायक थे.

ऐसा इसलिए भी है क्योंकि उन जैसी गायकी और उन जैसी समझ रखने वाला अब कोई नहीं दिखता. जब तक वो जिंदा थे, तब भी ऐसे लोग कम ही दिखते थे जो ग़ज़ल की बारीकियों को समझते हों. मसलन ग़ज़ल क्या है, ग़ज़ल को कैसे गाना चाहिए, कौन-कौन से राग हैं जिनमें आप अच्छी ग़ज़ल गा सकते हैं और किन रागों से परहेज़ करना चाहिए.

मेहदी हसन को ग़ज़ल गाते वक्त एक राग से दूसरे राग में जाने और हर राग को बखूबी निभाने में महारथ हासिल थी.

ग़ज़ल के भाव को समझ कर उसे गाना आसान नहीं होता. इसमें पेचीदगियां आती हैं. बहुत से गायक कोई भी गजल चुन लेते हैं और उसे गाने लगते हैं, लेकिन ऐसा नहीं होता.

ग़ज़ल की बारीकियां

एक बार मेहदी हसन ने मुझे मिसाल देते हुए बताया कि ग़ालिब की एक गजल है, **दिल ही तो है, न संगो ख़िस्त, दर्द से भर न आए क्यों, रोएंगे हम हज़ार बार, कोई हमें रुलाएं क्यों.**

ख़िस्त का मतलब है ईंट और ये शब्द त पर खत्म होता है, लेकिन इसे आसानी गाने में नहीं ढाल सकते, क्योंकि पंक्ति के आखिर में स्वर पर खत्म होने वाले शब्दों को गाना आसान है लेकिन जो व्यंजन पर खत्म होते हैं उन्हें गाना मुश्किल है.

स्वरों पर खत्म होने वाले शब्दों में गायकी के रंग दिखाए जा सकते हैं लेकिन ख़िस्त जैसा शब्द त पर खत्म होता है और ये कलाकारी दिखाने के लिए अपने पीछे कुछ नहीं छोड़ता. इसीलिए ग़ज़ल को चुनना आसान काम नहीं है.

मेहदी हसन इन तमाम बारीकियों को समझते थे और वहीं बातें उनकी गायकी को खूबसूरत बनाती थीं. लोग भी उसे सराहते थे, भले उन्हें गजल और उसकी बारीकियों के बारे में ज्यादा न पता हो. ठीक वैसे ही जैसे आपको खाना बनाना भले न आता हो, लेकिन अच्छा खाने के ज़ायके को तो सराह सकते हैं.

ग़ज़ल का भविष्य

मेहदी हसन का जाना इसलिए भी सालता है कि अब ग़ज़ल को गाने वाले ऐसे लोग नहीं दिखते हैं. ग़ज़ल के पुराने शौकीनों को दिल बहलाने के लिए आज भी मेहदी हसन या गुलाम अली साहब की 15-20 साल या उससे पुरानी गज़ल़ों को सुनना पड़ता है. ग़ज़ल में नया कुछ नहीं आ रहा है.

मेहदी हसन साब को सुन कर बहुत से लोग ग़ज़ल गायक बने हैं. इनमें जगजीत सिंह और हरिहरन जैसे गायकों के नाम आते हैं. साथ ही तलत अजीज भी हैं.

HIN3A12b Texte 8

पूरी सदी में मेहदी हसन जैसा कोई नहीं: आबिदा परवीन

कल्पना शर्मा
बीबीसी संवाददाता
गुरुवार, 14 जून, 2012 को 12:03 IST तक के समाचार

'देख तो दिल की जां से उठता है, ये धुंआ कहां से उठता है...' पाकिस्तानी सूफी गायक आबिदा परवीन इन्हीं पंक्तियों के ज़रिए याद कर रही हैं मशहूर ग़ज़ल गायक मेहदी हसन को. मेहदी हसन का कल कराची के एक अस्पताल में निधन हो गया. वो 84 वर्ष के थे और एक लम्बे समय से बीमार थे.

'देख तो दिल की जां से उठता है...', ये ग़ज़ल मेहदी हसन साहब की गाई हुई है. बीबीसी से बात करते हुए आबिदा परवीन कहती हैं, "हर पंक्ति, हर ग़ज़ल मेहदी हसन साहब की ही है. हमारे ज़हन से, दिल से यहां तक कि हमारी रूह से मेहदी हसन कभी निकल ही नहीं सकते. मैं तो कहूंगी कि जाते-जाते वो सब जगह बस धुंआ ही कर गए हैं. एक अजब क़यामत ढा गए हैं. "

आबिदा का मानना है कि शारीरिक तौर पर भले ही मेहदी हसन ने इस दुनिया को अलविदा कह दिया हो लेकिन गायकी के लिहाज़ से और उनकी शख्सियत के हिसाब से वो आज भी यहां मौजूद हैं और हमेशा मौजूद रहेंगे.

मेहदी साहब की तारीफ करना शायद सूरज को दिया दिखाने जैसा हो लेकिन फिर भी आबिदा कहती हैं, "मेहदी साहब पूरी सदी में एक ही थे, इस पूरी सदी में उनके जैसा गायक पैदा ही नहीं हुआ. आप किसी भी गायक की गायकी को देख लीजिए हर किसी में आपको मेहदी हसन की झलक मिल जाएगी. हर गायक की प्रेरणा स्रोत रहे हैं मेहदी हसन."

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए आबिदा कहती हैं, "मैं समझती हूं कि ग़ज़ल को जिस संजीदगी के साथ मेहदी हसन ने पेश किया, वैसा न पहले किसी ने किया था और आगे भी कोई वैसा नहीं कर सकता. ग़ज़ल गायकी को शहंशाहत बख्शने वाले मेहदी हसन ही थे."

मेहदी हसन की अपनी कला पर महारत को आबिदा कुछ ये कह कर बताती हैं, "उन्होंने इतनी बड़ी-बड़ी ग़ज़्लयात गाई, इतना अच्छा तलफ़्फ़ुज़ बयान किया. उनसे पहले ऐसा था ही नहीं."

आबिदा ये भी कहती हैं कि इतनी ऊँची शख्सियत होने के बावजूद भी उनमें सीखने की भूख थी. वो कहती हैं, "मेहदी हसन हर वक़्त सीखते रहते थे. इनका सीखना कभी भी कम नहीं हुआ. जितनी मेहनत वो करते थे उतनी मेहनत कौन कर सकता है. वो अपनी ही मौसीक़ी में गुम रहते थे. मैंने तो इतनी लगन किसी और गायक में नहीं देखी. ऐसा जज़्बा ही नहीं देखा. मेहदी हसन ने जो रिश्ता मौसीक़ी से जोड़ा वो रिश्ता उनका किसी और से था ही नहीं. वो मौसीक़ी की दुनिया में ही रहते थे."

आबिदा कहती हैं, "बड़े-बड़े लोगों के साथ मेहदी हसन का ताल्लुक था, जो इनकी गज़्लयात और मौसीक़ी को देखते थे. दस-पन्द्रह लोग बैठे होते थे और सारी रात मेहदी साहब बस एक ही ग़ज़ल को गाते रहते थे. वो ऐसे लोग होते थे जो मेहदी साहब को बताते थे कि ये शब्द ऐसे है और ये ऐसे."

मेहदी हसन की बेमिसाल आवाज़ के बारे में आबिदा कहती हैं, "जो ऊपर वाले ने मेहदी हसन को आवाज़ बख्शी थी वो बहुत बड़ा हुस्न था. इसके अलावा सुर पर उनकी बहुत ही बढ़िया पकड़ थी."

आबिदा परवीन तो यहां तक कहती हैं कि जिस तरह का सुर मेहदी हसन लगाते थे वैसे सुर तो किसी और

गायक से कभी लगे ही नहीं.
मेहदी हसन प्रेरणा के एक बड़े स्रोत रहे हैं. लेकिन दुर्भाग्य है कि अब शायद ग़ज़ल गाने का उतना चलन नहीं रहा. आज ग़ज़ल गाने वाले और अच्छी ग़ज़ल गाने वाले बहुत कम हैं.
कुछ लोग कोशिश कर रहे हैं. ग़ज़ल गा रहे हैं, लेकिन सच यही है कि अच्छी ग़ज़ल गाने वाले अब हैं नहीं. अगर हैं भी तो वैसे मेहदी हसन या गुलाम अली जैसा रुतबा हासिल नहीं कर पाते.

मुफलिसी के आखिरी दिन

मेहदी हसन के आखिरी दिन बहुत मुश्किलों और मुफसिली वाले रहे, जो एक विडंबना है.
ये सही है कि वो बहुत लोकप्रिय गायक रहे जिससे उन्हें दौलत भी खूब मिली.
पाकिस्तान और भारत ही नहीं, बल्कि यूरोप, मध्यपूर्व और अमरीका में उन्हें पसंद किया जाता था. लेकिन दक्षिण एशिया के पारंपरिक या घरानों वाले गायकों में आम तौर पर समस्या ये होती हैं कि वे उन्हें वित्तीय प्रबंधन नहीं आता. इसीलिए उन्हें आखिरी दिनों में मुफलिसी का सामना करना पड़ा.
दूसरा पाकिस्तान जैसे मुल्क में, जिसे उन्होंने इतना कुछ दिया है, लेकिन वहां कलाकार की इतनी इज्ज्त नहीं है जैसे भारत या दूसरे देशों में है.
ये बेहद अफसोस की बात है कि क्योंकि पाकिस्तान से इतने अच्छे अच्छे गायक आते. कई बार तो ऐसे गायक आपको भारत में भी नहीं मिलते. लेकिन पाकिस्तान उनकी कदर करना नहीं जानता. इसलिए मेहदी हसन साहब को भी आखिरी दिनों में परेशानियों का सामना करना पड़ा